

فهرست

# سیاوش کسرای

## مجموعه اشعار

|    |              |
|----|--------------|
| ۲۱ | مجموعه اشعار |
| ۲۵ | مجموعه اشعار |
| ۲۸ | مجموعه اشعار |
| ۲۹ | مجموعه اشعار |
| ۳۲ | مجموعه اشعار |
| ۳۴ | مجموعه اشعار |
| ۳۶ | مجموعه اشعار |
| ۴۲ | مجموعه اشعار |
| ۴۴ | مجموعه اشعار |
| ۴۸ | مجموعه اشعار |
| ۵۱ | مجموعه اشعار |
| ۵۳ | مجموعه اشعار |
| ۶۰ | مجموعه اشعار |
| ۶۲ | مجموعه اشعار |
| ۶۳ | مجموعه اشعار |



مؤسسه انتشارات نگاه  
«تأسیس ۱۳۵۲»

|        |    |              |
|--------|----|--------------|
| ۱۳۸۱/۱ | ۶۶ | مظلم         |
| ۱۳۸۱/۲ | ۶۹ | مظلم         |
| ۱۳۸۱/۳ | ۶۹ | سایه         |
| ۱۴۰۱/۱ | ۷۷ | کیو قرآن اشک |
| ۱۴۰۱/۲ | ۷۷ | باد گل       |
| ۱۴۰۱/۳ | ۵۷ | طرح          |
| ۱۴۰۱/۴ | ۷۷ | عظمت         |
| ۱۴۰۱/۵ | ۸۸ | نیلوفر       |
| ۱۴۰۱/۶ | ۲۸ | تسوه سپهر    |
| ۲۱     | ۷۸ | اشاره        |

## فهرست

|        |    |                    |
|--------|----|--------------------|
| ۱۵۸۱/۱ | ۸۸ | کار گل             |
| ۱۵۸۱/۲ | ۱۶ | میشاوی             |
| ۲۵     | ۶۶ | مجسمه‌ی فردوسی     |
| ۲۸     | ۶۶ | کارگران راه        |
| ۲۹     |    | رقص ایرانی         |
| ۳۲     |    | شالیکار            |
| ۳۴     |    | گریز رنگ           |
| ۳۶     |    | کولی من            |
| ۴۲     |    | چشمه               |
| ۴۴     |    | پس از من شاعری آید |
| ۴۸     |    | مارافسا            |
| ۵۱     |    | موج                |
| ۵۳     |    | خواب               |
| ۶۰     |    | گلدان              |
| ۶۲     |    | اقیانوس            |
| ۶۳     |    | پاییز درو          |

## آوا

|     |       |                 |
|-----|-------|-----------------|
| ۱۳۴ | ..... | خَنَظَل         |
| ۱۳۷ | ..... | انتظار          |
| ۱۳۸ | ..... | سایه            |
| ۱۴۰ | ..... | کیوتران اشک     |
| ۱۴۲ | ..... | بادگار          |
| ۱۴۳ | ..... | طرح             |
| ۱۴۴ | ..... | عَطَش           |
| ۱۴۶ | ..... | نیاز            |
| ۱۴۸ | ..... | اندوه سیمُغ     |
| ۱۵۲ | ..... | بادبادک‌ها      |
| ۱۵۴ | ..... | کارگاه          |
| ۱۵۸ | ..... | بیداری          |
| ۱۵۹ | ..... | مترسک           |
| ۱۶۱ | ..... | تشویش           |
| ۱۶۲ | ..... | شهر ما          |
| ۱۶۴ | ..... | تنگ             |
| ۱۶۷ | ..... | پاییز           |
| ۱۶۸ | ..... | دریا            |
| ۱۷۰ | ..... | شب‌نم           |
| ۱۷۲ | ..... | آتشی در دور دست |
| ۱۷۵ | ..... | اشک و لب‌خند    |
| ۱۷۷ | ..... | چلچله           |
| ۱۷۹ | ..... | افسوس           |
| ۱۸۱ | ..... | قلوه سنگ        |
| ۱۸۲ | ..... | آبادی           |
| ۱۸۴ | ..... | بهانه           |

|    |       |                           |
|----|-------|---------------------------|
| ۶۶ | ..... | عاشق کُش                  |
| ۶۷ | ..... | بهار                      |
| ۶۹ | ..... | باغ                       |
| ۷۱ | ..... | داغگاه                    |
| ۷۳ | ..... | مست                       |
| ۷۵ | ..... | سگه                       |
| ۷۷ | ..... | آرزو                      |
| ۸۰ | ..... | در شب پایان نیافته‌ی سعدی |
| ۸۲ | ..... | چشم‌ها                    |
| ۸۷ | ..... | تشویش                     |
| ۸۸ | ..... | پرواز                     |
| ۹۱ | ..... | انسان                     |
| ۹۴ | ..... | آرزوی بهار                |
| ۹۶ | ..... | بندباز                    |

### منظومه‌ی آرش کمانگیر

|    |       |             |
|----|-------|-------------|
| ۹۹ | ..... | برف می‌بارد |
|----|-------|-------------|

### خون سیاوش

|     |       |                |
|-----|-------|----------------|
| ۱۱۹ | ..... | واریز          |
| ۱۲۲ | ..... | مرغ توفان      |
| ۱۲۸ | ..... | زمستان         |
| ۱۲۹ | ..... | سرگذشت شمشیر   |
| ۱۳۱ | ..... | هنوز           |
| ۱۳۲ | ..... | جستجو          |
| ۱۳۳ | ..... | طبیعت نیمه‌جان |

سنگ و شبنم

|     |         |
|-----|---------|
| ۲۴۳ | ترانه   |
| ۲۵۳ | رباعی   |
| ۲۶۲ | دو بیتی |

با دماوند خاموش

|     |                      |
|-----|----------------------|
| ۲۶۷ | باور                 |
| ۲۷۱ | آوازی از پنجره‌ی ماه |
| ۲۷۴ | گرمسیر               |
| ۲۷۶ | غزل برای درخت        |
| ۲۷۸ | دیوانگی              |
| ۲۷۹ | طرح                  |
| ۲۸۱ | پیوند                |
| ۲۸۳ | زاینده‌گی            |
| ۲۸۴ | در آستانه            |
| ۲۸۶ | خر در چمن            |
| ۲۹۰ | چشمداشت              |
| ۲۹۱ | هول                  |
| ۲۹۷ | رونق                 |
| ۲۹۸ | فاتح                 |
| ۳۰۰ | بیدار خواب           |
| ۳۰۲ | حاصل                 |
| ۳۰۴ | تصویر                |
| ۳۰۵ | غربت                 |
| ۳۰۸ | زمین باطل            |

|     |                           |
|-----|---------------------------|
| ۱۸۶ | بوی بهار                  |
| ۱۸۸ | گل‌های سپید               |
| ۱۹۰ | کابوس                     |
| ۱۹۳ | آرزو                      |
| ۱۹۷ | سنگ                       |
| ۱۹۹ | جفت                       |
| ۲۰۰ | ماهی آینه                 |
| ۲۰۲ | هیچ‌کس در خانه‌ی خود نیست |
| ۲۰۵ | طنین                      |
| ۲۰۷ | شب‌های دشت                |
| ۲۰۹ | بهار می‌شود               |
| ۲۱۱ | داربست                    |
| ۲۱۴ | جهان‌پهلوان               |
| ۲۲۰ | دیدار                     |
| ۲۲۳ | کودک و میوه               |
| ۲۲۴ | من آن خاموش درختم         |
| ۲۲۶ | کنار غم                   |
| ۲۲۸ | نامزدی                    |
| ۲۳۰ | کلید                      |
| ۲۳۱ | فردا                      |
| ۲۳۵ | جامه‌ای بر آدمیت          |
| ۲۳۷ | هدیه                      |
| ۲۳۸ | بُن‌بست                   |
| ۲۳۹ | زندگی                     |

|          |                          |
|----------|--------------------------|
| ۳۸۶..... | حکایت مردی که نه می گفت  |
| ۳۸۸..... | شب‌نم و آه               |
| ۳۹۱..... | خانه‌ی انسان             |
| ۳۹۲..... | کلیدها                   |
| ۳۹۴..... | خانگی                    |
| ۳۹۶..... | تاریکی در تاریکی         |
| ۳۹۷..... | در تماشاگاه پاییز        |
| ۳۹۹..... | تاریخی                   |
| ۴۰۱..... | چه بگویم؟                |
| ۴۰۲..... | بچه کلاغ                 |
| ۴۰۴..... | شب می رود ز دست          |
| ۴۰۵..... | یک، دو، سه               |
| ۴۰۶..... | عمر کوتاه من و قرن و مرگ |
| ۴۱۰..... | قشو                      |
| ۴۱۲..... | نوزاد                    |
| ۴۱۳..... | رفتگر                    |
| ۴۱۴..... | یاد دوست                 |
| ۴۱۷..... | ویتنامی دیگر             |
| ۴۲۰..... | پیش از بیداری شهر        |
| ۴۲۱..... | سرود                     |
| ۴۲۳..... | یک ضرب                   |
| ۴۲۵..... | آینه را یفکن             |
| ۴۲۷..... | شکار                     |
| ۴۲۹..... | ماه و دیوانه             |
| ۴۳۱..... | شبهه                     |

|          |                     |
|----------|---------------------|
| ۳۱۰..... | بهار و شادی         |
| ۳۱۱..... | باران چه کرد خواهد؟ |
| ۳۱۳..... | دعای گل سرخ         |
| ۳۱۶..... | در راه              |
| ۳۱۹..... | دزد                 |
| ۳۲۲..... | مگس                 |
| ۳۲۳..... | خاموشانه            |
| ۳۲۴..... | بینایی              |
| ۳۲۶..... | کبوتران قاصد        |
| ۳۲۷..... | بدرود               |
| ۳۲۹..... | با دماوند خاموش     |
| ۳۳۲..... | درد دست             |
| ۳۳۳..... | آبادان              |
| ۳۳۴..... | گل و بلبل           |
| ۳۳۶..... | هنگام هنگامه ها     |

### خانگی

|          |                     |
|----------|---------------------|
| ۳۶۱..... | بر تخت عمل          |
| ۳۷۲..... | زمین کال            |
| ۳۷۳..... | با برافروختن کبریتی |
| ۳۷۶..... | رشد                 |
| ۳۷۸..... | سازندگی             |
| ۳۷۹..... | سیاهه               |
| ۳۸۲..... | چاقو تیزکن          |
| ۳۸۴..... | خنده                |

از قرق تا خروس خوان

|     |                                |
|-----|--------------------------------|
| ۴۹۹ | پیام                           |
| ۵۰۱ | مصّب                           |
| ۵۰۶ | دیداری با آتش و عسل            |
| ۵۰۹ | از قرق تا خروسخوان             |
| ۵۱۲ | در فروبستگی                    |
| ۵۱۷ | قصیده‌ی درازراه رنج تا رستاخیز |
| ۵۲۳ | چراغی فرا راه توفان            |
| ۵۲۶ | بهشت زهرا                      |
| ۵۳۰ | هزاردستان                      |
| ۵۳۳ | در بزم یاد شمایم               |

آمریکا! آمریکا!

|     |                           |
|-----|---------------------------|
| ۵۳۷ | طلوع دوباره               |
| ۵۳۹ | گذر از تاریکی             |
| ۵۴۲ | بزم خجسته                 |
| ۵۴۳ | کج‌جایی                   |
| ۵۴۵ | بازگشت                    |
| ۵۴۷ | بر سکوی ماه مه            |
| ۵۵۱ | من برادر توام!            |
| ۵۵۳ | گزینش                     |
| ۵۵۵ | حکایت                     |
| ۵۵۷ | بر سنگ مزار خسرو روزبه    |
| ۵۵۸ | بر سنگ مزار پرویز حکمت‌جو |
| ۵۵۹ | مگذار تا بخوانمت          |
| ۵۶۱ | از رسول رنج به امام خلق   |

|     |                         |
|-----|-------------------------|
| ۴۳۲ | طرح                     |
| ۴۳۳ | چشم، نه گوش و دهان      |
| ۴۳۵ | کرانه‌ی عظیم دوست داشتن |

به سرخی آتش به طعم دود

|     |                                 |
|-----|---------------------------------|
| ۴۳۹ | له‌له و تنفس                    |
| ۴۴۳ | دگر به جوخه‌ی آتش نمی‌دهند طعام |
| ۴۴۶ | به سرخی آتش به طعم دود          |
| ۴۵۰ | پویندگان                        |
| ۴۵۲ | تصویر                           |
| ۴۵۴ | رای دیگر                        |
| ۴۵۶ | دیداری یک‌سویه                  |
| ۴۵۹ | پرستوها در باران                |
| ۴۶۰ | توگد                            |
| ۴۶۳ | بازماندگان                      |
| ۴۶۴ | پوکه                            |
| ۴۶۵ | هجده‌هزارمین                    |
| ۴۶۹ | خواب‌نوشین                      |
| ۴۷۱ | بر سرزمین سوختگی                |
| ۴۷۵ | دوست داشتن                      |
| ۴۷۸ | شعری                            |
| ۴۸۱ | زنهار                           |
| ۴۸۵ | خم، بر جنازه‌ای دیگر            |
| ۴۹۰ | گره‌بند خون                     |
| ۴۹۴ | شقایق                           |
| ۴۹۵ | نام و سیما                      |

|     |            |
|-----|------------|
| ۶۲۲ | شعر یونانی |
| ۶۲۵ | پرنده      |
| ۶۲۷ | این بار    |
| ۶۲۹ | اشاره      |
| ۶۳۱ | وحدت       |
| ۶۳۲ | شیشه‌ی عمر |
| ۶۳۴ | پیک        |
| ۶۳۶ | خاموشی     |
| ۶۳۷ | گل خفته    |
| ۶۳۹ | شهادت شمع  |
| ۶۴۱ | آغاز       |

### تواش‌های تبر

|     |                     |
|-----|---------------------|
| ۶۴۵ | پاییز               |
| ۶۴۶ | باران نمی‌تواند     |
| ۶۴۸ | سرسام               |
| ۶۴۹ | شوق                 |
| ۶۵۰ | کاشی اصفهان         |
| ۶۵۲ | سرحد آدمی           |
| ۶۵۳ | نماز بر سجاده‌ی سبز |
| ۶۵۵ | گشایش               |
| ۶۵۶ | رهایی               |
| ۶۵۸ | ساز سرود            |
| ۶۶۰ | پیامبر و پیام       |
| ۶۶۱ | کوبه                |

|     |                          |
|-----|--------------------------|
| ۵۶۴ | خانه‌ی خیابان شانزده آذر |
| ۵۶۷ | در پایان                 |
| ۵۶۹ | بی مرگان                 |
| ۵۷۱ | به آن‌ها که زنده‌اند     |
| ۵۷۳ | آشتی                     |
| ۵۷۵ | آمریکا! آمریکا!          |
| ۵۷۸ | از ننگخانه‌ی شیطان       |
| ۵۸۰ | تعلیق                    |
| ۵۸۱ | یلدا                     |
| ۵۸۲ | جنگ ناگزیر               |
| ۵۸۳ | سرود دریا                |
| ۵۸۴ | دعای من                  |
| ۵۸۶ | عطر وفا                  |
| ۵۸۸ | نغمه‌ی پیوند             |
| ۵۹۰ | صبحانه                   |
| ۵۹۱ | مردی بزرگ در خم این راه  |
| ۵۹۳ | چشم و چراغ               |
| ۵۹۷ | جغرافیای یک سرگذشت       |
| ۶۰۴ | پیغام                    |
| ۶۰۶ | سرود همراهی              |
| ۶۰۹ | سرود جمهوری              |

### چهل کلید

|     |                     |
|-----|---------------------|
| ۶۱۳ | در گذر از خوان هشتم |
| ۶۲۰ | اسم شب              |
| ۶۲۱ | فرهادها             |

### هدیه برای خاک

۷۱۵..... هدیه برای خاک

### ستارگان سپیده دم

۷۲۵..... من با توام رفیق

۷۲۸..... طلوعی با خورشیدهای خاموش

۷۳۶..... عقاب سپیدبال

۷۳۹..... پیک پیشتاز

۷۴۱..... آواز قو

۷۴۳..... عشق را و درد را

۷۴۵..... در آتش

۷۴۷..... به آن زندانی

### مهره‌ی سرخ

۷۵۱..... در آمدی بر مهره‌ی سرخ

### هوای آفتاب

۸۰۳..... برگ‌های پاییزی

۸۰۴..... آن زمرّد دل‌تنگ

۸۰۵..... آه آینه

۸۰۶..... همراه

۸۰۸..... قصه‌ی مرد آواز و گل

۸۱۰..... در خانه‌ی دوست

۸۱۲..... آینده کاران

۶۶۳..... چشم‌انداز

۶۶۴..... آفتابی

۶۶۵..... هجوم

۶۶۷..... زمین

۶۶۸..... ره آورد

۶۷۱..... تشییع جنازه

۶۷۲..... گره

۶۷۴..... تفنگ من!

۶۷۷..... تا شب چراغ دریا

۶۸۲..... سال نو سلام!

۶۸۴..... هیروشیما

۶۸۶..... در رهگذار باد

۶۸۸..... روایتی دیگر

۶۸۹..... افسوس

۶۹۱..... اسیر

۶۹۳..... شاعر

### پیوند

۶۹۷..... پل

۶۹۹..... میهن خشم

۷۰۳..... سرود مردمی

۷۰۵..... جزیره‌ی جان

۷۰۷..... میزبان

۷۰۸..... همبستگی

۷۱۱..... آن زن بهار کرد



|          |                                    |
|----------|------------------------------------|
| ۸۵۸..... | بوی وطن.....                       |
| ۸۵۹..... | پاسخ به "سایه".....                |
| ۸۶۱..... | نهنگ.....                          |
| ۸۶۲..... | با آن پهلوان می آیم.....           |
| ۸۶۵..... | دیدار خوب تو.....                  |
| ۸۶۶..... | فرزند من کجاست؟!.....              |
| ۸۶۸..... | با هر چهام که شعله به جان است..... |
| ۸۷۱..... | دردِ خویش.....                     |
| ۸۷۲..... | عمر من.....                        |
| ۸۷۳..... | گره گشایی.....                     |
| ۸۷۵..... | سرگذشت.....                        |
| ۸۷۸..... | ما مهاجران.....                    |
| ۸۸۰..... | دریایی.....                        |
| ۸۸۲..... | خطرا!.....                         |
| ۸۸۳..... | غریبانه.....                       |
| ۸۸۵..... | جوانی.....                         |
| ۸۸۶..... | در برون رفت از شب یلدا.....        |
| ۸۸۸..... | سرود کودکان.....                   |
| ۸۹۰..... | محبوس در ابریشم خویش.....          |
| ۸۹۱..... | دشت. آهو. ستاره.....               |
| ۸۹۳..... | ققنوس.....                         |
| ۸۹۷..... | در جنگل.....                       |
| ۸۹۸..... | از این سوی با خزر.....             |
| ۹۰۱..... | با آرزو آمده.....                  |
| ۹۰۳..... | پنهانه.....                        |

|          |                                    |
|----------|------------------------------------|
| ۸۱۳..... | چون در رسد هنگام.....              |
| ۸۱۴..... | سرود مردمی.....                    |
| ۸۱۶..... | پاییز.....                         |
| ۸۱۸..... | پیوند.....                         |
| ۸۲۱..... | آفتاب در شهر.....                  |
| ۸۲۳..... | بدآهنگی.....                       |
| ۸۲۵..... | بندی خوان هشتم.....                |
| ۸۲۸..... | ما برمی گردیم.....                 |
| ۸۳۰..... | ریشه و جنگل.....                   |
| ۸۳۱..... | کابل (طرح).....                    |
| ۸۳۲..... | به سبز جاودان من.....              |
| ۸۳۶..... | چشم به راه.....                    |
| ۸۳۸..... | در من کسی.....                     |
| ۸۴۰..... | مار.....                           |
| ۸۴۲..... | درخت تر.....                       |
| ۸۴۴..... | سر جان باختن.....                  |
| ۸۴۵..... | ای جان آفتابی عشق.....             |
| ۸۴۷..... | بر آسمندر من!.....                 |
| ۸۴۹..... | خاموش وار.....                     |
| ۸۵۰..... | دود نیلوفر.....                    |
| ۸۵۲..... | ابر غم.....                        |
| ۸۵۳..... | دریا دلی کجا و دل تنگ من کجا!..... |
| ۸۵۴..... | بهار آزادی.....                    |
| ۸۵۶..... | یاد دور افتادگان.....              |
| ۸۵۷..... | ققس.....                           |

|              |                                    |
|--------------|------------------------------------|
| ۹۰۶.....     | غم                                 |
| ۹۰۷.....     | از آن پرنده‌ی چوبی.....            |
| ۹۰۹.....     | به سوار سبزپوش.....                |
| ۹۱۱.....     | بر جاده‌های جهان.....              |
| ۹۱۳.....     | هستی سوز.....                      |
| ۹۱۵.....     | غزل سیاه.....                      |
| ۹۱۸.....     | پیام.....                          |
| ۹۲۰.....     | ای عشق.....                        |
| ۹۲۲.....     | چه کسی گشت مرا؟!.....              |
| ۹۲۴.....     | بر آب می‌روم.....                  |
| ۹۲۶.....     | در آزمون آتش.....                  |
| ۹۳۰.....     | باریک‌تر از مو.....                |
| ۹۳۱.....     | دریغا گل سرخ.....                  |
| ۹۳۲.....     | هستی باغ.....                      |
| ۹۳۴.....     | هوای آفتاب.....                    |
| ۹۳۷.....     | بیداری آینه.....                   |
| ۹۳۹.....     | واژه‌ی دلخواه.....                 |
| ۹۴۲.....     | خواب آب‌ها.....                    |
| ۹۴۴.....     | نالان.....                         |
| ۹۴۵.....     | خواب شمع.....                      |
| <b>نمایه</b> |                                    |
| ۹۴۹.....     | نمایه‌ی القبایی نام مجموعه‌ها..... |
| ۹۵۱.....     | نمایه‌ی القبایی نام شعرها.....     |
| ۹۶۷.....     | نمایه‌ی القبایی سطر اول شعرها..... |

بسمه تعالی  
 این کتاب حاصل تلاش و زحمات فراوان است و بدین مناسبت از شما بزرگواران تقاضای عفو و بخشش می‌نمایم.  
 در صورتی که در این کتاب اشعار و مطالبی مشاهده شود که متعلق به دیگران است، خواهشمند است با اینجانب در تماس باشید تا جبران مناسب را انجام دهم.  
 با احترام و سپاس فراوان

### اشاره

سیاوش کسرائی به سال ۱۳۰۵ خورشیدی در اصفهان زاده شد و بسیار زود، در همان کودکی، به همراه خانواده‌اش به پایتخت آمد. در دانشکده‌ی حقوق و علوم سیاسی دانشگاه تهران درس خواند. او در صف شاگردان نیما یوشیج، شاعری نام‌آور و برجسته به شمار می‌رود. دوازده سال پایانی زندگی‌اش در خارج از کشور گذشت و در سال ۱۳۷۴ به دلیل بیماری قلبی در وین، پای‌تخت اتریش، زندگی را بدرود گفت و در گورستان مرکزی وین (بخش هنرمندان) به خاک سپرده شد.

کتاب حاضر مجموعه‌ی کامل همه‌ی دفترهای شعر شاعر است. آوا (۱۳۳۶)، آرش کمانگیر (۱۳۳۸)، خون سیاوش (۱۳۴۱)، سنگ و شبنم (۱۳۴۵)، بادماوند خاموش (۱۳۴۵)، خانگی (۱۳۴۶)، به سرخی آتش، به طعم دود (۱۳۵۵)، از قرق تا خروسخوان (۱۳۵۷)، آمریکا! آمریکا! (۱۳۵۸)، چهل کلید (۱۳۶۰)، تراشه‌های تیر (۱۳۶۲)، پیوند (۱۳۶۳)، هدیه برای خاک (۱۳۶۸)، ستارگان سپیده‌دم (۱۳۶۸)، مهره‌ی سرخ (۱۳۷۴)، هوای آفتاب (۱۳۸۱).

چاپ این دفترها بر اساس اصلاحاتی است که شاعر در سال‌های آخر عمر خود انجام داده‌است. در چاپ مستقل برخی از این دفترها شعرهایی به انتخاب خود شاعر تکرار شده‌است که در این مجموعه‌ی کامل ضرورتی به تجدید چاپ آنها ندیدیم.

|      |       |
|------|-------|
| ۹۱۱  | ..... |
| ۹۱۳  | ..... |
| ۹۱۵  | ..... |
| ۹۱۸  | ..... |
| ۹۲۰  | ..... |
| ۹۲۲  | ..... |
| ۹۲۴  | ..... |
| ۹۲۶  | ..... |
| ۹۳۰  | ..... |
| ۹۳۱  | ..... |
| ۹۳۴  | ..... |
| ۹۳۶  | ..... |
| ۹۳۷  | ..... |
| ۹۳۸  | ..... |
| ۹۳۹  | ..... |
| ۹۴۲  | ..... |
| ۹۴۴  | ..... |
| ۹۴۶  | ..... |
| ۹۴۷  | ..... |
| ۹۴۸  | ..... |
| ۹۴۹  | ..... |
| ۹۵۰  | ..... |
| ۹۵۱  | ..... |
| ۹۵۲  | ..... |
| ۹۵۳  | ..... |
| ۹۵۴  | ..... |
| ۹۵۵  | ..... |
| ۹۵۶  | ..... |
| ۹۵۷  | ..... |
| ۹۵۸  | ..... |
| ۹۵۹  | ..... |
| ۹۶۰  | ..... |
| ۹۶۱  | ..... |
| ۹۶۲  | ..... |
| ۹۶۳  | ..... |
| ۹۶۴  | ..... |
| ۹۶۵  | ..... |
| ۹۶۶  | ..... |
| ۹۶۷  | ..... |
| ۹۶۸  | ..... |
| ۹۶۹  | ..... |
| ۹۷۰  | ..... |
| ۹۷۱  | ..... |
| ۹۷۲  | ..... |
| ۹۷۳  | ..... |
| ۹۷۴  | ..... |
| ۹۷۵  | ..... |
| ۹۷۶  | ..... |
| ۹۷۷  | ..... |
| ۹۷۸  | ..... |
| ۹۷۹  | ..... |
| ۹۸۰  | ..... |
| ۹۸۱  | ..... |
| ۹۸۲  | ..... |
| ۹۸۳  | ..... |
| ۹۸۴  | ..... |
| ۹۸۵  | ..... |
| ۹۸۶  | ..... |
| ۹۸۷  | ..... |
| ۹۸۸  | ..... |
| ۹۸۹  | ..... |
| ۹۹۰  | ..... |
| ۹۹۱  | ..... |
| ۹۹۲  | ..... |
| ۹۹۳  | ..... |
| ۹۹۴  | ..... |
| ۹۹۵  | ..... |
| ۹۹۶  | ..... |
| ۹۹۷  | ..... |
| ۹۹۸  | ..... |
| ۹۹۹  | ..... |
| ۱۰۰۰ | ..... |

مجموعه‌ی فردوسی

.....

۱۹

تاور صخره‌ای بر ساهل آمد  
ستون کرده است پاهای است سینه بر ره توفان

تهران، ۱۳۳۶

دو چشمان خیره بر گهواره‌ی خورشید

سبز جزر و مدها، بیکر او را تراشیده

ز برف روزگاران، بر سرش دستار بیچیده

خروپ زندگی بر چهره‌اش بسیار تابیده

که تازنگی مسین دو متن پاشیده

بود دیری که بر کنده است با جنگال در چشمان

عقابی آشیانه

که مانده جای آن جنگال‌ها بر روی گومستان

چو جای تازیانه

چاپ این دفترها بر اساس اصلاحاتی است که شاعر در سال‌های آخر عمر خود انجام داده‌است. در چاپ مستقل برخی از این دفترها شعرهایی به انتخاب خود شاعر تکرار شده‌است که در این مجموعه‌ی کامل ضرورتی به تجدید چاپ آنها ندیدیم.

این است آوای مردی که در بیابان فریاد می‌کشد.

انجیل

Tel

۳۳۱۰۳۳۱

خداوند بخیر و برکت دهد به این کتاب و به خواننده آن

تن عزیزان زیبایی شده این جا ستایندگی به بیخ و کله

اگر چه چشم‌های زار دیده‌اند و با آنکه در بیخ و کله

ولی در کفر و کجی و در کفر و کجی و در کفر و کجی

### مجسمه‌ی فردوسی

دی ۱۳۳۳

لب‌بالین زلف به درخت و درخت

هاتج بر روی کوهستان که دیده به هم‌راه

هال انجیل در کتب آن مجسمه منگنه‌ای

لمست به‌ها به دره مجسمه در کوه روی منگنه

تناور صخره‌ای بر ساحل امید

ستون کرده است پا، داده است سینه بر ره توفان

پی افکنده میان قرن‌ها طغیان

دو چشمان خیره بر گهواره‌ی خورشید

ناله به بیابان و بیابان و بیابان

ستیز جزر و مدها، پیکر او را تراشیده

ز برف روزگاران، بر سرش دستار پیچیده

غروب زندگی بر چهره‌اش بسیار تابیده

که تارنگی مسین در متن پاشیده

خون‌آلود

بود دیری که برکنده است با چنگال در چشمان

عقابی آشیانه

که مانده جای آن چنگال‌ها بر روی کوهستان

نه‌ای که در کوهستان

چو جای تازیانه